माननीय प्रधानमंत्री के 12 साल बेमिसाल : सेवा, सुशासन, जनकल्याण

व्याख्यानमाला –2

भारत की बहुभाषिकता एवं त्रिभाषा सूत्र'

मुख्य वक्ता

प्रोफेसर योगेंद्र प्रताप सिंह

निदेशक

पं0 गोविंद बल्लभ पंत सामाजिक शोध संस्थान प्रयागराज

दिनांक 15 जून 2026 पुर्वाहन 11:00 बजे

कार्यक्रम संरक्षक एवं अध्यक्ष

आचार्य सत्यकाम जी

माननीय कुलपति

नोडल अधिकारी कार्यक्रम

प्रोफेसर संजय कुमार सिंह

भूगोल, समाज विज्ञान विद्याशाखा

आयोजक

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज

Uttar Pradesh Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj
॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥
12 साल बेमीसाल
12 UNPARALLELED YEARS
Trust, Development, Public Welfare
5 to 21 June 2026
Congratulations on successfully completing 12 Glorious and Unparalleled Years of Governance!
#12SaalBemisaal #ViksitBharat2047

उ.प्र. राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥
द्वारा आयोजित
व्याख्यानमाला
19 जून 2026 | अपराह्न 12.00 बजे से
विषय: "भारत की बहुभाषिकता एवम त्रिभाषा सूत्र"
12 साल बेमीसाल
12 UNPARALLELED YEARS
विश्वास, विकास, जन कल्याण
5 से 21 जून 2026
प्रमुख वक्ता एवं पदाधिकारी
संरक्षक एवं अध्यक्ष
आचार्य सत्यकाम
माननीय कुलपति,
यू.पी.आर.टी.ओयू. प्रयागराज
मुख्य वक्ता
प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह
निदेशक,
पंडित गोविंद बल्लम पंत सामाजिक शोध संस्थान, प्रयागराज
कार्यक्रम अधिकारी (नोडल)
प्रो. संजय कुमार सिंह
भूगोल विभाग,
यू.पी.आर.टी.ओयू. प्रयागराज
धन्यवाद ज्ञापन
प्रो. आनंदानंद त्रिपाठी
राजनीति विज्ञान विभाग,
यू.पी.आर.टी.ओयू. प्रयागराज
ज़ूम मीटिंग आई. डी : 999 1423 4939
पासवर्ड: 1234
व्हाट्स ग्रुप लिंक
https://chat.whatsapp.com/Gy6k50nNVjxAlccgnyVms6
संपर्क: 7525048007
#12SaalBemisaal #ViksitBharat2047
संपर्क: 7525048007

उ0प्र0 राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

केन्द्र सरकार के 12 वर्ष : सेवा, सुशासन एवं जनकल्याण

व्याख्यानमाला – 2026

भारत की बहुभाषिकता एवं त्रिभाषा सूत्र

दिनांक	समय	माध्यम
19 जून 2026 (शुक्रवार)	दोपहर 12.00 बजे से	ऑनलाइन

संरक्षक एवं अध्यक्ष

आचार्य सत्यकाम
माननीय कुलपति
उ0प्र0राजर्षि टण्डन
मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज

मुख्य वक्ता

प्रो0 योगेन्द्र प्रताप सिंह
निदेशक
पं. गोविन्द बल्लभ पंत
सामाजिक शोध संस्थान झूंसी,
प्रयागराज

कार्यक्रम अधिकारी (नोडल)

प्रो0 संजय कुमार सिंह
भूगोल विभाग
उ0प्र0राजर्षि टंडन
मुक्त विश्वविद्यालय
प्रयागराज

धन्यवाद ज्ञापन

प्रो0 आनन्दानन्द त्रिपाठी
राजनीति विज्ञान विभाग
उ0प्र0राजर्षि टंडन
मुक्त विश्वविद्यालय
प्रयागराज

संचालन

डॉ0 सुनील कुमार
प्राचीन इतिहास विभाग
उ0प्र0राजर्षि टंडन
मुक्त विश्वविद्यालय
प्रयागराज

zoom

ZOOM MEETING DETAILS

Meeting ID : 99914234939
Passcode : 1234

सूचना हेतु लिंक

https://chat.whatsapp.com/Gy6k50nNVjxAlccgnyVms6

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन
मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

7525048007

आप सभी का हार्दिक स्वागत है !

भाषा केवल सरकार का नहीं अपितु आमजन का विषय है

कुलगुरु आचार्य सत्यकाम जी

केंद्र सरकार के 12 साल बेमिसाल के उपलक्ष्य में आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में व्याख्यानमाला के अंतर्गत आज छठवा दिन ' भारत की बहुभाषिकता एवं त्रिभाषा सूत्र' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। नोडल अधिकारी प्रोफेसर संजय सिंह ने अतिथियों का वाचिक स्वागत एवं विषय परिवर्तन के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। भारत की बहुभाषिकता एवं त्रिभाषा सूत्र विषय व्याख्यान में मुख्य वक्ता के रूप में प्रोफेसर योगेंद्र प्रताप सिंह थे। प्रोफेसर योगेंद्र प्रताप सिंह एक भाषा विशेषज्ञ और गोविंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान प्रयागराज के निदेशक पद पर कार्यरत हैं। प्रोफेसर सिंह ने अपने शब्दों की शुरुआत **कोस कोस पर पानी बदले, चार कोस पर वानी** उक्ति से किया। प्रोफेसर सिंह ने बताया कि भाषा राष्ट्र की अभिव्यक्ति होती हैं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसा से भारतीय भाषा समिति को स्थापित किया गया, जिसका कार्य भारतीय भाषाओं का संरक्षण, उत्थान व उनको बढ़ावा देना है। भाषा की उत्पत्ति मनुष्य की हजारों वर्षों की चेतना का परिणाम है। भाषा अभिव्यक्ति व संवाद का माध्यम होता है पूरी दुनिया में 6800 से 7000 भाषाएं बोली जाती हैं। भाषा का निर्माण व्यक्ति द्वारा नहीं बल्कि समाज द्वारा होता है। सम्पूर्ण यूरोप में एक सामान्य भाषा एस्पिरंटो को लागू किया गया। परंतु यह प्रयोग असफल रहा क्योंकि भाषा को कृत्रिम रूप से आरोपित नहीं किया जा सकता है। भारत के चिंतन की प्रवृत्ति अखंडता वादी है जो उसकी भाषाओं के माध्यम से समझी जा सकती है प्राचीन काल में कोई भी भारतीय चारों धाम की यात्रा बिना किसी अनुवादक के संपन्न करता था इस प्रकार की यात्रा से न केवल लोक में संवाद होता है बल्कि भाषाओं के बीच भी संवाद होता है। भाषाई संवाद से भाषायें लोकतांत्रिक होती हैं । भाषाई लोकतंत्रिकता का सबसे बड़ा उदाहरण यह है कि एक ही लोक कथा पूरे भारत में अलग–अलग भाषाओं में दिखाई पड़ती है रामायण 250 भाषाओं में प्राप्त होता है। 1991 की जनगणना में भारत में 1652 भाषा थी जो 2011 में 1369 भाषण आकलित की गई। भाषाओं की मृत्यु से सभ्यता व संस्कृति की मृत्यु होती है। भारत की बहुभाषिकता संस्कृत समृध्दि का प्रतीक है। एकाधिक भाषी लोग भारत में अधिक हैं। प्रो सिंह ने आगे बताया की भाषा का परिनिष्ठ रूप शास्त्री भाषा होती है भाषा रूपी पेड़ में लोक बोलियां–जडे, संचार भाषा–तना, सांस्कृतिक भाषा–पुष्प व सभ्यता और संस्कृति के मूल तत्व बीज होता है। समय के साथ भाषा के रूप बदलते रहते हैं जैसे भारत में ब्रज, अवधि, खड़ी भाषा राष्ट्रभाषा के रूप में नेतृत्व करती रही हैं। कोई भी भाषा शुद्ध नहीं हो सकती है 1968 में गठित कोठारी आयोग ने त्रिभाषा सूत्र को सुझाया था जिसमें एकमात्र भाषा दूसरी संचार भाषा और तीसरी दक्षिण भारत की एक भाषा की संस्तुति की गई थी। हमारे व्यवहार में लोकतंत्रिकता भाषा में लोकतंत्रिकता से संभव है प्रोफेसर सिंह ने कहा भाषा से ही अतुल्य भारत का निर्माण होगा। कार्यक्रम के अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कुलगुरु आचार्य सत्यकाम जी ने सभी हिंदी भाषीं को एक दक्षिण भारतीय भाषा सीखने पर जोर दिया। हिंदी को जन–जन तक पहुंचाने के लिए भगिनी भाषाओं को सिखाना होगा भाषा का विषय केवल सरकार का नहीं अपितु आमजन का विषय है। अंत में कार्यक्रम का समापन प्रोफेसर आनंद आनंद त्रिपाठी जी के सभी को धन्यवाद ज्ञापन के साथ समापन हुआ। कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर सुनील कुमार असिस्टेंट प्रोफेसर प्राचीन इतिहास विभाग ने किया।

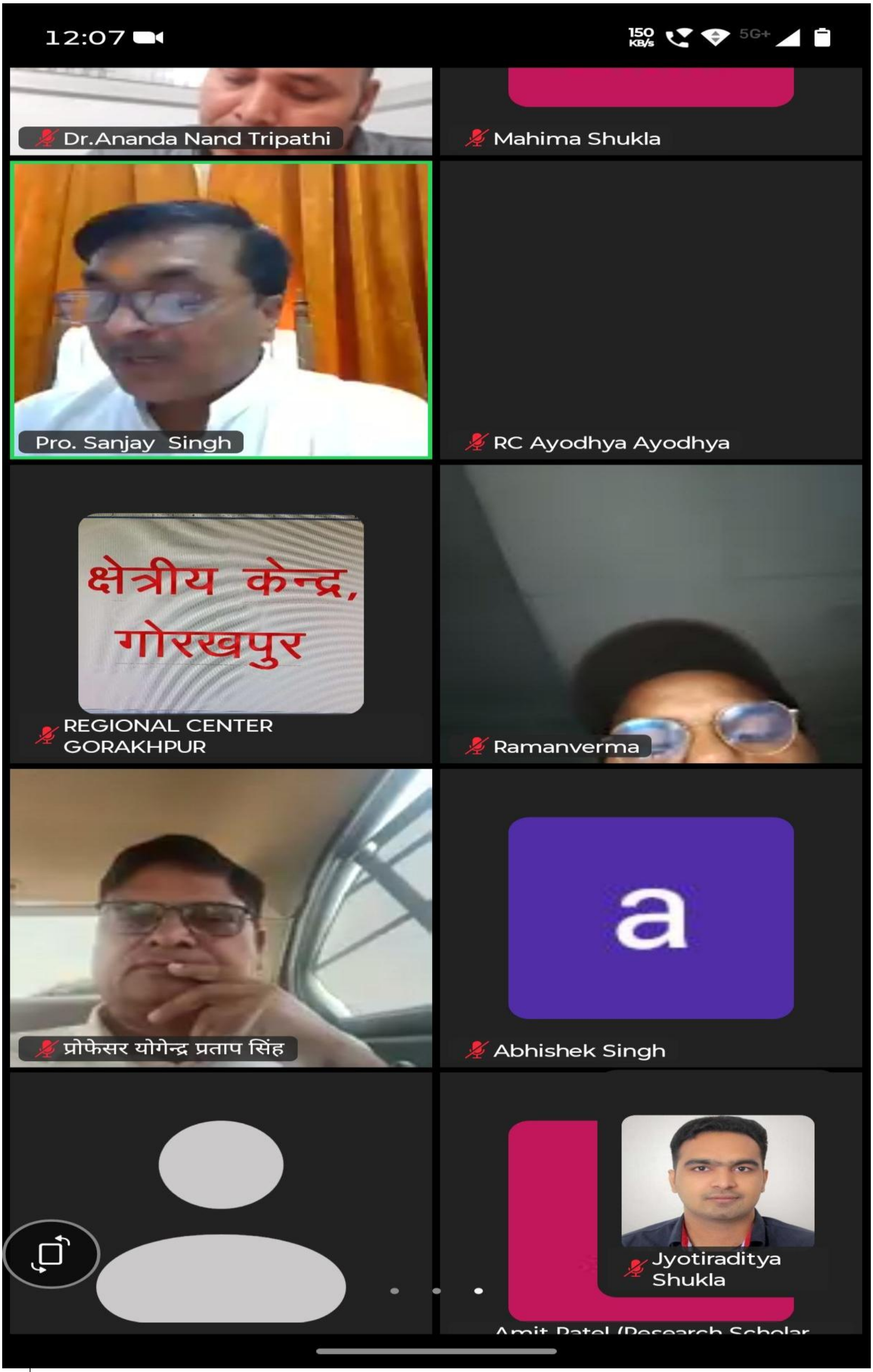
12:07
Dr.Ananda Nand Tripathi
Mahima Shukla
Pro. Sanjay Singh
RC Ayodhya Ayodhya
क्षेत्रीय केन्द्र,
गोरखपुर
REGIONAL CENTER
GORAKHPUR
Ramanverma
a
प्रोफेसर योगेन्द्र प्रताप सिंह
Abhishek Singh
Jyotiraditya
Shukla

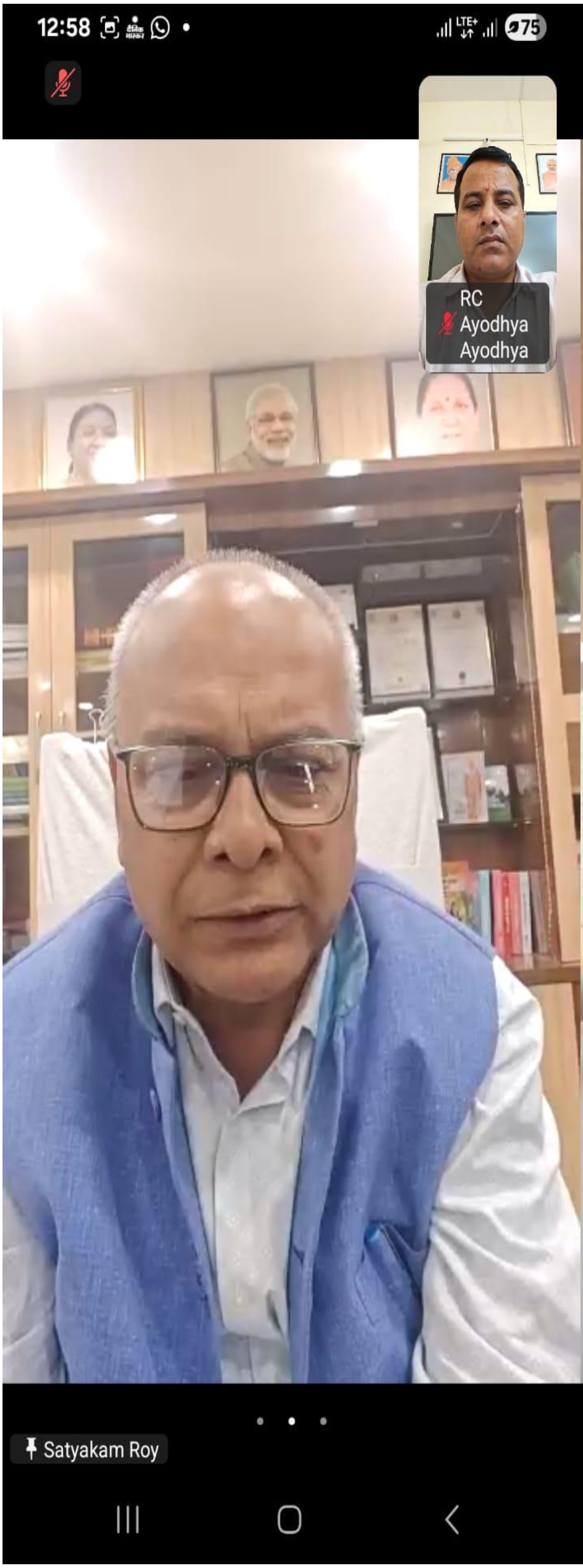
12:58
RC
Ayodhya
Ayodhya
Satyakam Roy

12:43
RC
Ayodhya
Ayodhya
प्रोफेसर योगेन्द्र प्रताप सिंह

RC Ayodhya
Ayodhya
Pro. Sanjay Singh

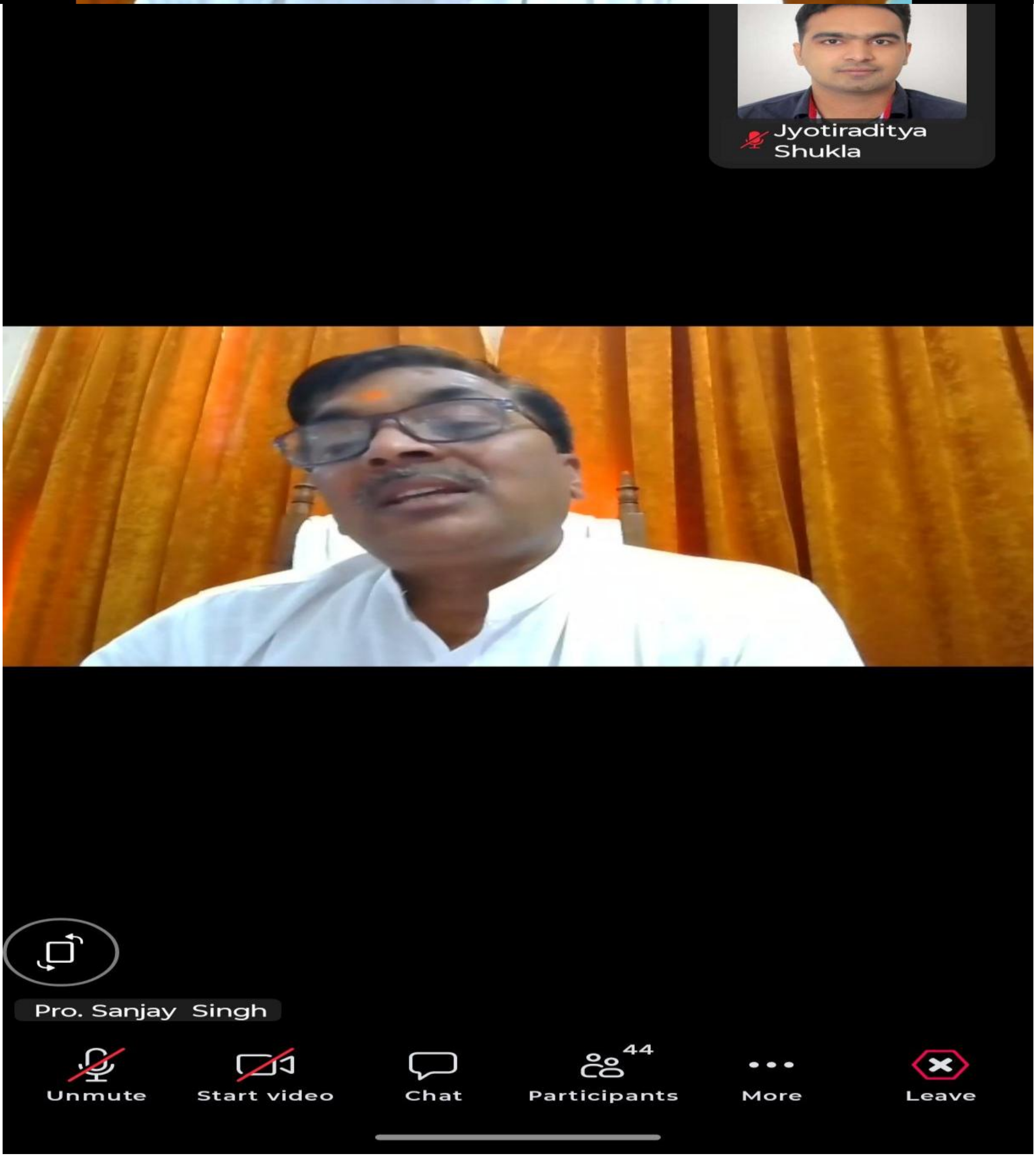
Jyotiraditya
Shukla
Pro. Sanjay Singh
Unmute
Start video
Chat
44
Participants
More
Leave

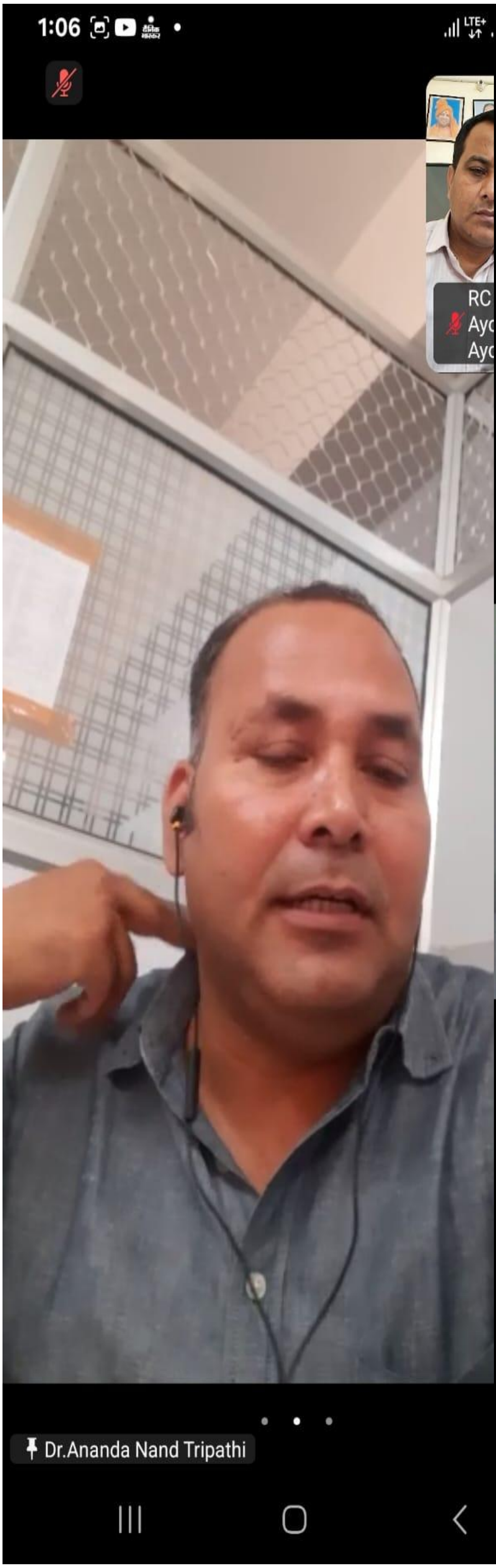
1:06
RC
Dr.Ananda Nand Tripathi

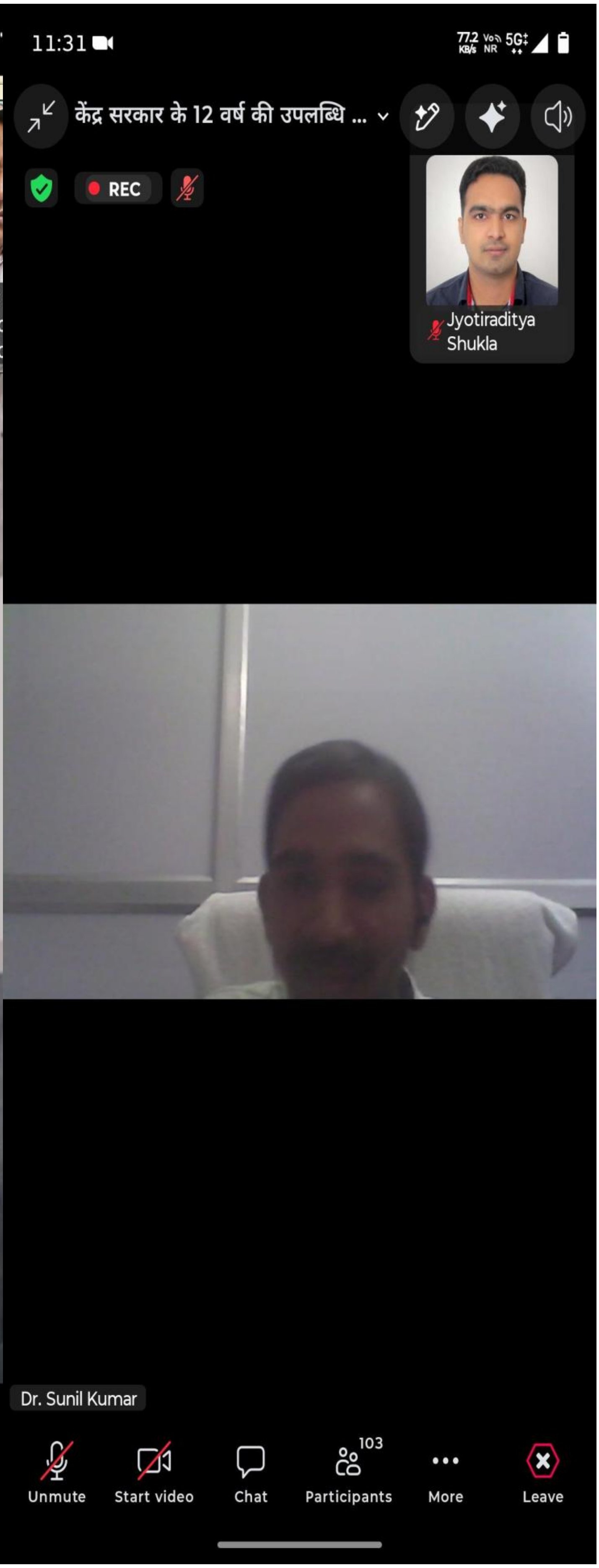
11:31
केंद्र सरकार के 12 वर्ष की उपलब्धि ...
REC
Jyotiraditya Shukla
Dr. Sunil Kumar
Unmute
Start video
Chat
103
Participants
More
Leave

1:02
केंद्र सरकार के 12 वर्ष की उपल...
REC
Dr. Digvijay Vishwakarma Jaunpur
Dr. Sunil Kumar
Dr.Ananda Nand Tripathi
Pro. Sanjay Singh
Rc kanpur
Satyakam Roy
प्रोफेसर योगेन्द्र प्रताप सिंह
RC Ayodhya Ayodhya
1234
Unmute
Start video
Chat
Participants
More
Leave

12:18
केंद्र सरकार के 12 वर्ष की उपल...
REC
Dr. Digvijay Vishwakarma Jaunpur
Dr. Sunil Kumar
Dr.Ananda Nand Tripathi
Pro. Sanjay Singh
Sishu
प्रोफेसर योगेन्द्र प्रताप सिंह
RC Ayodhya Ayodhya
Unmute
Start video
Chat
Participants
More
Leave

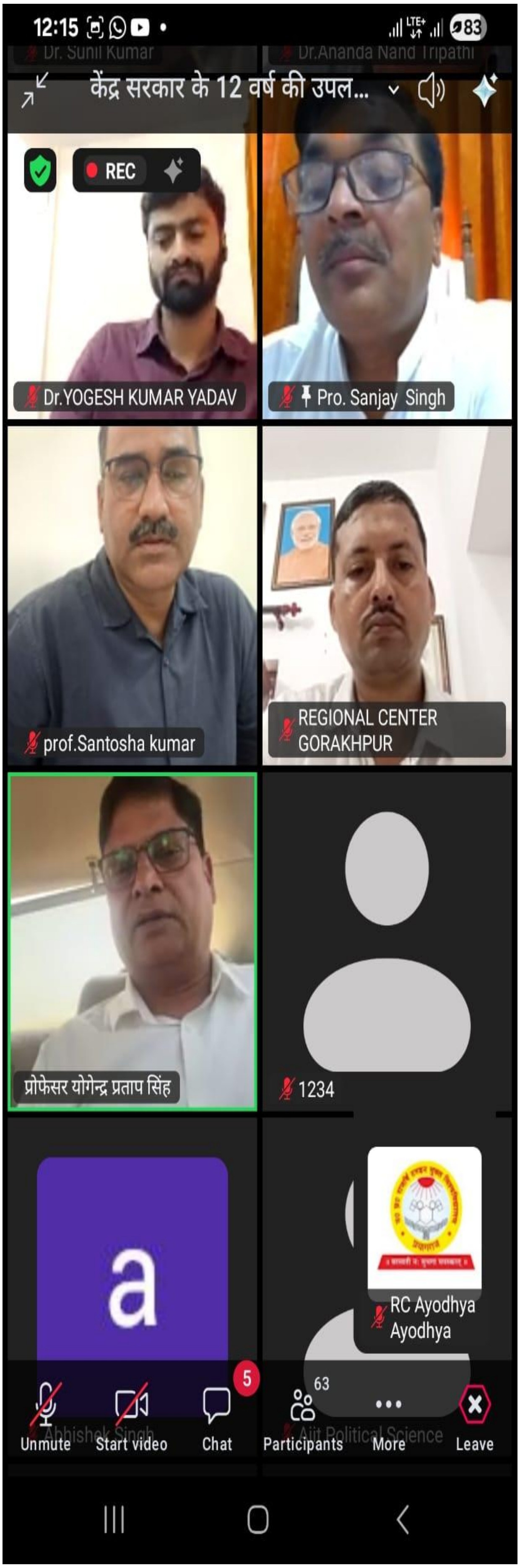
12:15
Dr. Sunil Kumar
Dr.Ananda Nand Tripathi
केंद्र सरकार के 12 वर्ष की उपल...
REC
Dr.YOGESH KUMAR YADAV
Pro. Sanjay Singh
prof.Santosha kumar
REGIONAL CENTER GORAKHPUR
प्रोफेसर योगेन्द्र प्रताप सिंह
1234
a
RC Ayodhya Ayodhya
Abhishek Singh
Ajit Political Science
Unmute
Start video
5
Chat
63
Participants
More
Leave

12:16
Dr. Sunil Kumar
Dr.Ananda Nand Tripathi
Dr.Shailendra Kumar singh
Dr.YOGESH KUMAR YADAV
Pro. Sanjay Singh
prof.Santosha kumar
REGIONAL CENTER GORAKHPUR
प्रोफेसर योगेन्द्र प्रताप सिंह
a
Abhishek Singh
RC Ayodhya Ayodhya
Ajit Political Science

12:07
Dr. Digvijay Vishwakarma Jaunpur
Dr. Sunil Kumar
Dr.Ananda Nand Tripathi
Pro. Sanjay Singh
RC Ayodhya Ayodhya
Ramanverma
प्रोफेसर योगेन्द्र प्रताप सिंह
Abhishek
Jyotiraditya Shukla

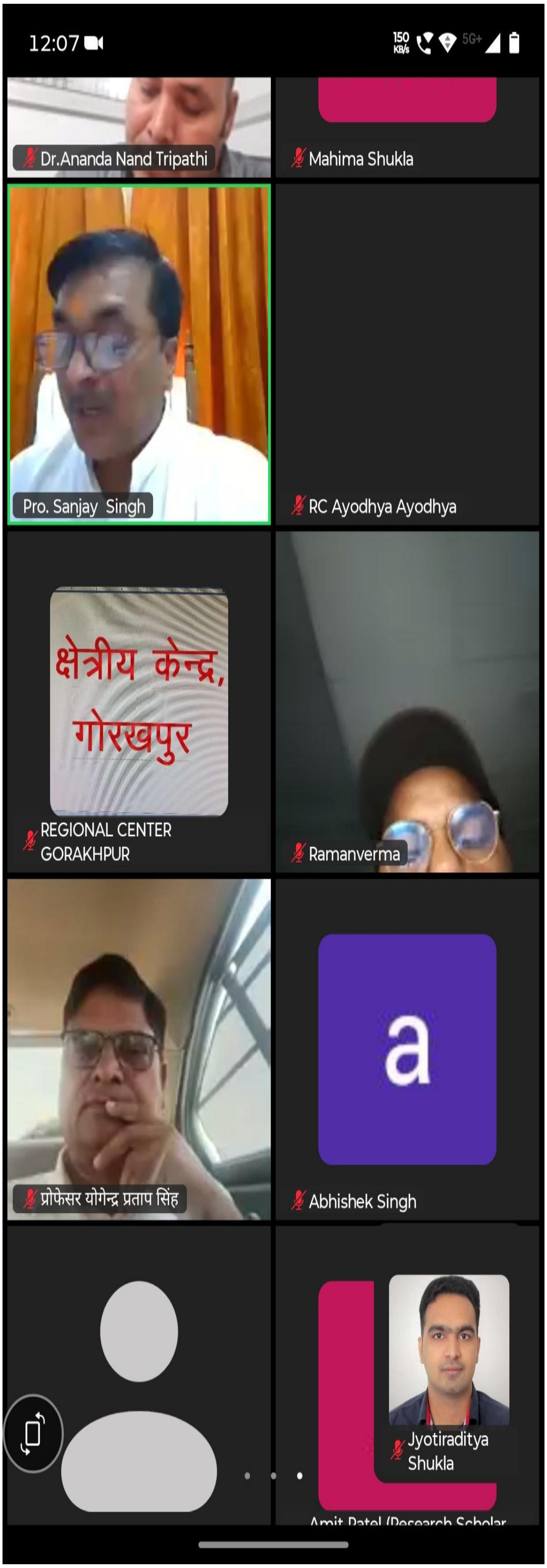
12:07
Dr.Ananda Nand Tripathi
Mahima Shukla
Pro. Sanjay Singh
RC Ayodhya Ayodhya
क्षेत्रीय केन्द्र, गोरखपुर
REGIONAL CENTER GORAKHPUR
Ramanverma
प्रोफेसर योगेन्द्र प्रताप सिंह
a
Abhishek Singh
Jyotiraditya Shukla

7:58 AM | 0.4KB/s

nyayadheesh pra...

...ा गूंजता रहा। देर ...फ मार्केट के सामने ...म पहलवान मनहा ...ा, मोहम्मद उमर,

टीम के साथ भीड़ को कंट्रोल किया और लोगों की खिदमत की। कोतवाली पुलिस शाहगंज पुलिस पूरी तरह से मुस्तैद थी मेहंदी को सकुशल संपन्न कराया।

टिकट चेकिंग स्टाफ को एक नाबालिक बालिका गुमसुम अवस्था में मिली, जिसे रेलवे सुरक्षा बल पोस्ट प्रयागराज छिवकी को सुपुर्द

आरओबी की कुल लंबाई 585 मीटर है, जबकि रेलवे हिस्से की लंबाई 36 मीटर तथा चौड़ाई 7.5 मीटर है। यह परियोजना चुनार नगर को

गया। यह ... एजेंसियों के ... उत्कृष्ट उदा... कार्य के ...

...अवसर पर ...आयोजन

...एवं विद्यार्थियों की ...त करने के उद्देश्य ...पोस्टर तथा अन्य ...ों का भी आयोजन ...र्यक्रम में उपस्थित ...यों ने प्रतिभागियों ...नवर्धक प्रस्तुतियों ... इस अवसर पर ...न का अभिन्न अंग ...वं संतुलित जीवन ...ोगाभ्यास अपनाने ...या। कार्यक्रम का ...ज्ञापन के साथ ...ा डॉ. मो. आसिफ ...जकीय यूनानी ...एवं चिकित्सालय, ...है।

त्रिभाषा सूत्र राष्ट्रीय एकता का सशक्त माध्यम : प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह

भाषाओं के संरक्षण में जनभागीदारी आवश्यक : प्रोफेसर सत्यकाम

प्रयागराज। केंद्र सरकार के 12 साल बेमिसाल कार्यक्रमों के अंतर्गत उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज में आयोजित व्याख्यानमाला के छठे दिन शुक्रवार को भारत की बहुभाषिकता एवं त्रिभाषा सूत्र विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, प्रयागराज के निदेशक प्रोफेसर योगेन्द्र प्रताप सिंह ने भारत की भाषाई विविधता की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परंपरा पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भाषा किसी व्यक्ति की नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक चेतना की अभिव्यक्ति है। भाषा संवाद का माध्यम होने के साथ-साथ सभ्यता, संस्कृति और सामाजिक स्मृतियों की संवाहक भी है। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप भारतीय भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु भारतीय भाषा समिति का गठन किया गया है। विश्व में लगभग 6800 से 7000 भाषाएँ बोली जाती हैं और भाषा का निर्माण समाज द्वारा होता है। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि भारत की बहुभाषिक परम्परा उसकी सांस्कृतिक अखण्डता का प्रतीक है। प्राचीन काल में चारधाम यात्राएँ भाषाई संवाद और सांस्कृतिक एकात्मता का माध्यम थीं। भाषाओं के बीच संवाद उन्हें लोकतांत्रिक बनाता है। रामायण के लगभग 250 भाषायी स्वरूप इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं। उन्होंने कोठारी आयोग (1968) द्वारा प्रतिपादित त्रिभाषा सूत्र का उल्लेख करते हुए कहा कि मातृभाषा, संपर्क भाषा तथा अन्य भारतीय भाषा का अध्ययन राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करता है। उन्होंने कहा कि व्यवहार में लोकतांत्रिकता, भाषा में लोकतांत्रिकता के माध्यम से ही संभव है तथा भाषा के माध्यम से ही अतुल्य भारत की अवधारणा साकार हो सकती है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सत्यकाम ने कहा कि प्रत्येक हिंदीभाषी को कम से कम एक दक्षिण भारतीय भाषा अवश्य सीखनी चाहिए। हिंदी को जन-जन तक पहुँचाने के लिए उसकी भगिनी भाषाओं के प्रति सम्मान तथा उन्हें सीखने की प्रवृत्ति विकसित करनी होगी। उन्होंने कहा कि भाषा केवल सरकार का नहीं, अपितु आमजन का विषय है। भाषा का संरक्षण और संवर्धन जनभागीदारी से ही संभव है।

जनसंपर्क अधिकारी डॉ प्रभात चन्द्र मिश्र ने बताया कि कार्यक्रम के प्रारंभ में नोडल अधिकारी प्रोफेसर संजय सिंह ने अतिथियों का वाचिक स्वागत एवं विषय प्रवर्तन किया। संचालन डॉ. सुनील कुमार ने तथा प्रोफेसर आनंदानंद त्रिपाठी ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

रा... हुआ...

प्रयागरा... शक्तिपीठ ... रही श्री राम... पर राष्ट्रीय ... महाराज जी... रामचरितम... जिसके चार... घाट कर्मघा... पर भगवान... को कथा सु... पर कागभु... कथा सुना... याज्ञवल्क्य ... कथा सुना... गोस्वामी तु... को कथा सु... जी कह रहे...

...रोजगार मेले का किया शुभारम्भ

...शिक्षार्थियों द्वारा प्रशिक्षार्थियों का चयन विभिन्न ...या जिनमें 2268 कम्पनियों द्वारा किया गया है।

आज कालिंदीपुरम में को श्री सुंदरकांड पाठ एवं भंडारा

प्रयागराज। श्रीराम भक्त हनुमान की कृपा से नर्मदेश्वर महादेव मंदिर, गोकुल सेक्टर में आगामी 20 जून को श्रीसुंदरकांड पाठ, प्रसाद वितरण एवं विशाल भंडारे का आयोजन किया जा रहा है।कार्यक्रम के आयोजक भाजपा काशी प्रान्त के क्षेत्रीय सह-संयोजक, चिकित्सा प्रकोष्ठ डॉ. सुशील सिन्हा ने बताया कि शनिवार, 20 जून 2026 को सायंकाल 5 बजे श्री सुंदरकांड पाठ का शुभारंभ होगा। इसके पश्चात लगभग 7 बजे से प्रसाद वितरण एवं भंडारा शुरू किया जाएगा।उल्लेखनीय है कि डॉ. सुशील सिन्हा कायस्थ पाठशाला और यूपी नर्सिंग होम एसोसिएशन के निवर्तमान अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

प्रयाग व्यापार मंडल के... खान का जन्मदिन हर्षो...

प्रयागराज।प्रयाग व्यापार मंडल के मंत्री मोहम्मद महमूद अहमद खान का जन्मदिन व्यापार मंडल द्वारा बड़े ही हर्षोल्लास और उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर व्यापार मंडल के अध्यक्ष राणा चावल, श्रीमती अवंतिका टंडन, प्रीतम सिंह, जितेंद्र सिंह,साहिल अरोड़ा , महामंत्री शुभम केसरवानी ,पल्लवी अरोड़ा, रोहित अरोरा ,प्रफुल्ल मि... सहित अने... ने उपस्थित... की हार्दिक ... ने उनके उत्त...

7:30 AM | 35.6KB/s

20 June- 1-10.pdf

फीसदी धनराशि राज्य सरकार खर्च करेगी। जबकि 50 फीसदी धनराशि प्रयागराज विकास प्राधिकरण द्वारा वहन किया जाएगा।

उन्होंने कहा है कि किसानों से आम सहमति के आधार पर जमीनें खरीदी जाएंगी। जमीन खरीदने के बाद रेरा अप्रूवल कराने के बाद आवासीय और ... जाएंगे।

प्रयागराज विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष ऋषिराज ने बताया कि एयरोसिटी योजना के दूसरे चरण में इसके अंदर आईटी आर्ट या आईटी सिटी बसाने की भी योजना है। जो पूरी तरह से हाईटेक होगी और बेंगलुरु की हाइटेक सिटी को टक्कर देगी। एयरोसिटी के अंदर विभिन्न खंडों का भी निर्माण किया जाएगा। एयरोसिटी निर्माण के लिए आम जनता से भी फीडबैक लिया जा रहा है। इस योजना में न्यायिक सेवा से जुड़े अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए भी न्याय कॉलोनी बनाए जाने का भी प्रस्ताव है। पीडीए के उपाध्यक्ष ऋषि राज का कहना है कि अलग-अलग वर्ग के लोगों के लिए सस्ते दरों पर कैसे आवासीय प्लाट उपलब्ध कराए जा सकते हैं। इस दिशा में प्रयागराज विकास प्राधिकरण काम कर रहा है। ताकि लोगों की आवासीय समस्या का समाधान हो सके।

त्रिभाषा सूत्र राष्ट्रीय एकता का सशक्त माध्यम : प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह

भाषाओं के संरक्षण में जनभागीदारी आवश्यक : प्रोफेसर सत्यकाम

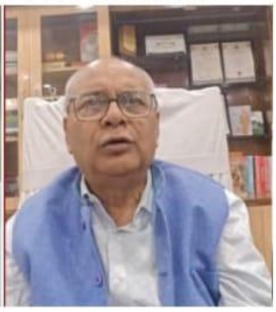

प्रातःकाल एक्सप्रेस

प्रयागराज। केंद्र सरकार के 12 साल बेमिसाल कार्यक्रमों के अंतर्गत उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज में आयोजित व्याख्यानमाला के छठे दिन शुक्रवार को भारत की बहुभाषिकता एवं त्रिभाषा सूत्र विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, प्रयागराज के निदेशक प्रोफेसर योगेन्द्र प्रताप सिंह ने भारत की भाषाई विविधता की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परंपरा पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भाषा किसी व्यक्ति की नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक चेतना की अभिव्यक्ति है। भाषा संवाद का माध्यम होने के साथ-साथ सभ्यता, संस्कृति और सामाजिक स्मृतियों की संवाहक भी है। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप भारतीय भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु भारतीय भाषा समिति का गठन किया गया है। विश्व में लगभग 6800 से 7000 भाषाएँ बोली जाती हैं और भाषा का निर्माण समाज द्वारा होता है। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि भारत की बहुभाषिक परम्परा उसकी सांस्कृतिक अखण्डता का प्रतीक है। प्राचीन काल में चारधाम यात्राएँ भाषाई संवाद और सांस्कृतिक एकात्मता का माध्यम थीं। भाषाओं के बीच संवाद उन्हें लोकतांत्रिक बनाता है। रामायण के लगभग 250 भाषायी स्वरूप इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

उन्होंने कोठारी आयोग (1968) द्वारा प्रतिपादित त्रिभाषा सूत्र का उल्लेख करते हुए कहा कि मातृभाषा, संपर्क भाषा तथा अन्य भारतीय भाषा का अध्ययन राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करता है। उन्होंने कहा कि व्यवहार में लोकतांत्रिकता, भाषा में लोकतांत्रिकता के माध्यम से ही संभव है तथा भाषा के माध्यम से ही अतुल्य भारत की अवधारणा साकार हो सकती है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सत्यकाम ने कहा कि प्रत्येक हिंदीभाषी को कम से कम एक दक्षिण भारतीय भाषा अवश्य सीखनी चाहिए। हिंदी को जन-जन तक पहुँचाने के लिए उसकी भगिनी भाषाओं के प्रति सम्मान तथा उन्हें सीखने की प्रवृत्ति विकसित करनी होगी। उन्होंने कहा कि भाषा केवल सरकार का नहीं, अपितु आमजन का विषय है। भाषा का संरक्षण और संवर्धन जनभागीदारी से ही संभव है।

जनसंपर्क अधिकारी डॉ प्रभात चन्द्र मिश्र ने बताया कि कार्यक्रम के प्रारंभ में नोडल अधिकारी प्रोफेसर संजय सिंह ने अतिथियों का वाचिक स्वागत एवं विषय प्रवर्तन किया। संचालन डॉ. सुनील कुमार ने तथा प्रोफेसर आनंदानंद त्रिपाठी ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षकगण, अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।

किसान आत्मनिर्भर बनेगा तभी विकसित भारत का सपना होगा साकार-स्वतंत्र देव सिंह

प्राकृतिक खेती केवल खेती नहीं, धरती माता की सेवा है-प्रभारी मंत्री
जिला पंचायत प्रयागराज में प्राकृतिक कार्यशाला हुई संपन्न

प्रातःकाल एक्सप्रेस

प्रयागराज। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर शुक्रवार को जिला पंचायत सभागार में विकसित कृषि नहीं बल्कि धरती माता की सेवा है। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग से अनेक गंभीर बीमारियां बढ़ी हैं, जबकि प्राकृतिक खेती से शुद्ध भोजन, स्वस्थ समाज और बन चुका है और किसानों को विभिन्न योजनाओं का लाभ सीधे उनके खातों में पहुंचाया जा रहा है।

सांसद प्रवीण पटेल ने कहा कि प्राकृतिक खेती भारतीय कृषि की प्राचीन एवं वैज्ञानिक पद्धति है, जो मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण और भूमि की उर्वरा शक्ति को सुरक्षित रखने का प्रभावी माध्यम है। विधायक दीपक पटेल ने किसानों से प्राकृतिक खेती को अपनाने और उसका ... देने वाले किसानों को प्रशस्ति पत्र एवं कृषि किट प्रदान कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में सांसद प्रवीण पटेल, महापौर गणेश केसरवानी, विधायक दीपक पटेल, विधायक गुरु प्रसाद मौर्य, विधायक सिद्धार्थ नाथ सिंह, भाजपा गंगापार जिलाध्यक्ष निर्मला पासवान, भा... जिलाध्यक्ष राजे... महानगर जिल... एमएलसी सुरे... श्रीवास्तव, कि... क्षेत्र अध्यक्ष काशी..., काशी क्षेत्र उपाध्यक्ष अमर नाथ यादव, जिला मीडिया प्रभारी गंगापार उमेश तिवारी, जिला मीडिया प्रभारी यमुनापार दिलीप कुमार चतुर्वेदी, महानगर सह मीडिया प्रभारी विवेक मिश्रा, जिलाधिकारी मनीष वर्मा, मुख्य विकास अधि...

6:24 AM | 0.1KB/s
Justice Express p...

Three-Language Formula is a Powerful Medium for National Unity: Prof. Yogendra Pratap Singh

JE CORRESPONDENT

■ Public Participation Essential for the Preservation of Languages: Prof. Satyakam

Prayagraj: Under the "12 Years of Transformative Governance" programs of the Central Government, a lecture on "India's Multilingualism and the Three-Language Formula" was organized on Friday, the sixth day of the lecture series at Uttar Pradesh Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj.

The keynote speaker, Prof. Yogendra Pratap Singh, Director of Govind Ballabh Pant Social Science Institute, Prayagraj, elaborated on the historical and cultural traditions of India's linguistic diversity. He stated that language is not an individual's possession but an expression of the collective consciousness of society. Besides being a medium of communication, language carries civilization, culture, and social memories.

He informed that, in accordance with the recommendations of the National

Education Policy (NEP) 2020, the Indian Languages Committee has been constituted for the preservation and promotion of Indian languages. He noted that approximately 6,800 to 7,000 languages are spoken worldwide and that languages are shaped by society itself.

Prof. Singh emphasized that India's multilingual tradition symbolizes its cultural unity and integrity. In ancient times, pilgrimages to the Char Dham served as a means of linguistic interaction and cultural integration. Dialogue among languages, he said, makes them more democratic. The nearly 250 linguistic versions of the Ramayana stand as an excellent example of this tradition.

Referring to the Three-Language Formula proposed by the Kothari Commission (1968), he said that the study of one's mother tongue, a link language, and another Indian language strengthens national unity. He added that democratic conduct in society is possible only through linguistic democracy, and it is through language that the vision of an "Incredible India" can truly be realized.

...rally amid geopolitical uncertainty, selloff in IT stocks

...Switzerland on Friday.

"Indian equity markets retreated after five con-

...secutive sessions of gains

...ponement of scheduled USâ•"Iran negotiations undermined expectations of a smooth progression in the broader peace process," Ponmudi R, CEO of Enrich Money, an online trading and wealth tech firm, said.

The cautious commentary from the global IT bellwether reignited worries about discretionary spending, delayed deal conversions, and the impact of geopolitical uncertainties on client spending patterns, according to Ajit Mishra, SVP, Research, Religare Broking Ltd.

"Markets snapped their five-session winning streak on Friday and ended lower amid a broad-based sell-off led by the IT pack.

The decline in the benchmark indice... gered by a sell... stocks following... than-expected o... Accenture, wh... ened hopes of an early recovery in the sector and raised concerns over demand prospects for Indian technology companies," Mishra said.

लिया।

कुछ देर बाद वह उसे गांव के बाहर उतारकर चले गए। वह ऑटो पकड़कर घर आया और फिर परिवारवालों को जानकारी दी। घरवालों ने सूचना दी तो पुलिस पहुंच गई।

गांव के बाहर लगे एक कैमरे का फुटेज खंगालने पर दोनों साइकिल से जाते दिखाई दिए। इससे पुलिस को शक हुआ। फिर से पूछताछ हुई तो वह अलग-अलग बयान देने लगा। एक बार कहा बताया कि भाई के कहने पर उसने झूठ बोला। भाई खुद रास्ते में उसे छोड़कर ई रिक्शा से कहीं चला गया है। तीन दिन पहले पापा ने उसे पढ़ाई के लिए डांटा था। इस पर नाराज होकर वह चला गया है।

डीसीपी यमुनानगर विवेक कुमार यादव का कहना है कि छोटे भाई ने पूछताछ में बताया है कि भाई खुद से गया है। उसके कहने पर ही उसने किडनैपिंग की झूठी कहानी बताई थी। किशोर की तलाश की जा रही है। वह एक सीसीटीवी फुटेज में ई रिक्शे से जाते हुए दिखाई भी दिया है।

प्रयागराज। इलाहाबाद मण्डल कांग्रेस, विधि विभाग प्रयागराज ने शुक्रवार को कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और सांसद राहुल गांधी का 56 वा जन्मदिवस धूमधाम से मनाया। हाईकोर्ट के समीप एक रेस्टोरेंट अधिवक्ताओं ने केक काटकर उनका जन्मदिन मनाया।अधिवक्ताओं ने संविधान बचाने के संकल्प को दोहराया। समारोह में उत्तर प्रदेश विधि विभाग के उपाध्यक्ष हरीश चंद्र दुबे, प्रदेश उपाध्यक्ष अविनाश कुमार वर्मा, रविंद्र सिंह, जितेंद्र नायक, इलाहाबाद मण्डल के अध्यक्ष जय प्रकाश सिंह उपस्थित रहे।

बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की गई है। चुनार-चोपन रेल खंड पर लूसा के निकट स्थित समपार फाटक 19 के यातायात सुगम बनाने के लिए निर्माणाधीन रोड ओवर ब्रिज के रेलवे भाग पर स्टील गर्डरों की स्थापना का कार्य पूर्ण किया गया।

जनसम्पर्क अधिकारी अमित कुमार सिंह ने शुक्रवार को बताया कि निर्माणाधीन आरओबी की कुल लम्बाई 585 मीटर है, जबकि रेलवे हिस्से की लम्बाई 36 मीटर तथा चौड़ाई 7.5 मीटर है। यह परियोजना चुनार नगर को राज्य

भाषाओं के संरक्षण में जनभागीदारी आवश्यकः प्रो. सत्यकाम

वॉइस ऑफ इलाहाबाद

प्रयागराज (हि.स)। केंद्र सरकार के 12 साल बेमिसाल कार्यक्रमों के अंतर्गत उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज में आयोजित व्याख्यानमाला के छठे दिन शुक्रवार को भारत की बहुभाषिकता एवं त्रिभाषा सूत्र विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

मुख्य वक्ता गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, प्रयागराज के निदेशक प्रो योगेन्द्र प्रताप सिंह ने भारत की भाषाई विविधता की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परम्परा पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भाषा किसी व्यक्ति की नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक चेतना की अभिव्यक्ति है। भाषा संवाद का माध्यम होने के साथ-साथ सभ्यता, संस्कृति और सामाजिक स्मृतियों की सम्वाहक भी है।

उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप भारतीय भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु भारतीय भाषा समिति का गठन किया गया है। विश्व में लगभग 6800 से 7000 भाषाएं बोली जाती हैं और भाषा का निर्माण समाज द्वारा होता है। उन्होंने कहा कि भारत की बहुभाषिक परम्परा उसकी सांस्कृतिक अखण्डता का प्रतीक है। प्राचीन काल में चारधाम यात्राएं भाषाई संवाद और सांस्कृतिक एकात्मता का माध्यम थीं। भाषाओं के बीच संवाद उन्हें लोकतांत्रिक बनाता है। रामायण के लगभग 250 भाषायी स्वरूप इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

उन्होंने कोठारी आयोग (1968) द्वारा प्रतिपादित त्रिभाषा सूत्र का उल्लेख करते हुए कहा कि मातृभाषा, सम्पर्क भाषा तथा अन्य भारतीय भाषा का अध्ययन राष्ट्रीय एकता को सुदृढ करता है। उन्होंने कहा कि व्यवहार में लोकतांत्रिकता, भाषा में लोकतांत्रिकता के माध्यम से ही संभव है तथा भाषा के माध्यम से ही अतुल्य भारत की अवधारणा साकार हो सकती है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो सत्यकाम ने कहा कि प्रत्येक हिंदीभाषी को कम से कम एक दक्षिण भारतीय भाषा अवश्य सीखनी चाहिए। हिंदी को जन-जन तक पहुंचाने के लिए उसकी भगिनी भाषाओं के प्रति सम्मान तथा उन्हें सीखने की प्रवृत्ति विकसित करनी होगी। उन्होंने कहा कि भाषा केवल सरकार का नहीं, अपितु आमजन का विषय है। भाषा का संरक्षण और संवर्धन जनभागीदारी से ही संभव है।

जनसंपर्क अधिकारी डॉ प्रभात चन्द्र मिश्र ने बताया कि कार्यक्रम के प्रारम्भ में नोडल अधिकारी प्रो संजय सिंह ने अतिथियों का वाचिक स्वागत एवं विषय प्रवर्तन किया। संचालन डॉ. सुनील कुमार ने तथा प्रो आनंदानंद त्रिपाठी ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षकगण, अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

अयोध्या मंदिर चढ़ावा चोरी
विरोधियों का नया शोर या चोरी

अयोध्या के विश्व प्रसिद्ध श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में चढ़ावे की चोरी के नित नए आरोप सामने आ रहे हैं। चार ट्रस्ट पदाधिकारियों के विरुद्ध नामजद रिपोर्ट भी थाने में दर्ज कराई गई है। ट्रस्ट की पहल पर उत्तर प्रदेश सरकार ने जांच के लिए एसआईटी गठित कर दी है। जांच के बाद ही पता चलेगा कि वास्तव में चढ़ावे में चोरी हुई है अथवा यह श्रद्धालुओं की आस्था पर आघात करने का कोई कुचक्र है। इस कथित चढ़ावा चोरी का आरोप लगाने वालों में कांग्रेस, समाजवादी पार्टी और आम आदमी पार्टी के वे नेता सबसे अधिक मुखर हैं, जो मंदिर निर्माण अभियान के कभी समर्थक नहीं रहे।

सामान्यतः ग्रहणकाल कुछ घंटों का होता है। शनिदेव की महादशा अधिकतम साढ़े सात वर्ष और राहु की महादशा अठारह वर्ष तक चलती में विधिवत प्राण-प्रतिष्ठा नहीं हो सकी। संघर्ष ने नया स्वरूप धारण किया। न्यायालयों में याचिकाएँ दायर हुईं और देशभर से श्रद्धालु कारसेवक के रूप में अयोध्या पहुँचने लगे। गोलियाँ चलीं, रामभक्तों ने बलिदान दिए, विवादित ढाँचा ध्वस्त हुआ। अंततः 9 नवम्बर 2019 को सर्वोच्च न्यायालय का ऐतिहासिक निर्णय आया। 5 फरवरी 2020 को संसद की अनुमति से भारत सरकार द्वारा स्वतंत्र श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास का गठन किया गया। 5 अगस्त 2020 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की उपस्थिति में भूमि-पूजन हुआ और 22 जनवरी 2024 को श्रीरामलला अपने जन्मस्थान पर विराजमान हो गए।

जब यह प्रकरण न्यायालय में था, तब सभी पक्षों ने न्यायालय के निर्णय को स्वीकार करने की घोषणा की थी। रामभक्तों को आशा की प्रक्रिया और चयनित नामों पर भी विवाद खड़ा करने का प्रयास हुआ। फिर भूमि-पूजन की विधि और मुख्य यजमान को लेकर प्रश्न उठाए गए। एक ओर भूमि-पूजन चल रहा था और दूसरी ओर मीडिया में मुहूर्त से लेकर मुख्य यजमान तक पर सवाल खड़े किए जा रहे थे।

विवाद का अगला मुद्दा श्रीरामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के अवसर पर कुछ शंकराचार्यों की अनुपस्थिति तथा तिथि-मुहूर्त को लेकर बनाया गया। इसके बाद ट्रस्ट द्वारा क्रय की गई भूमि के मूल्य को लेकर आरोप लगाए गए। लेकिन इन सब विवादों का रामभक्तों की श्रद्धा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। देश-विदेश

के विरुद्ध नामजद रिपोर्ट भी दर्ज कराई गई है।

इन आरोपों पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी संज्ञान लिया है और मंदिर प्रबंधन ने भी गंभीरता दिखाई है। मंदिर प्रशा[illegible] पर उत्तर प्रदेश स[illegible] सदस्यीय एसआ[illegible] किया। एसआईटी [illegible] में दानपेटियों [illegible] कर्मचारियों की आ[illegible] प्रक्रिया तथा दान के [illegible] लगातार तीन दिनों तक जांच की।

✍- रमेश शर्मा

एसआईटी अब उन लगभग पचास कर्मचारियों की संपत्ति की भी जांच कर रही है, जिन पर नोटों की चोरी का आरोप है। एसआईटी को सात दिनों में प्रारंभिक तथा पंद्रह

registered his name on the land. Based on this transfer, he obtained recognition for his school a school. Furthermore, he has obtained permission for three schools on a single campus on tive appeared, and Suryamani Shukla, the representative of the opposing Public Information

3 language formula powerful medium for national unity: Prof. Yogendra Pratap Singh

Public participation is essential for the preservation of languages: Prof Satyakam

SANYAM BHARAT CORRESPONDENT

Prayagraj: Under the Central Government's 12 years of unmatched programs, a lecture was organized on the topic of India's multilingualism and three language formula on Friday, the sixth day of the lecture series organized at Uttar Pradesh Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj.

The keynote speaker, Professor Yogendra Pratap Singh, Director of the Govind Ballabh Pant Institute of Social Sciences, Prayagraj, elaborated on India's historical and cultural tradition of linguistic diversity. He stated that language is not an expression of an individual, but of society's collective consciousness. Language, besides being a medium of communication, also carries civilization, culture, and social memories. He explained that, in accordance with the recommendations of the National Education Policy 2020, the Indian Language Committee has been formed to preserve and promote Indian languages. Approximately 6,800 to 7,000 languages are spoken worldwide, and language is socially constructed. Professor Singh stated that India's multilingual tradition symbolizes its cultural integrity. In ancient times, the Char Dham Yatra was a medium for linguistic dialogue and cultural unity.

Dialogue between languages makes it democratic. The approximately 250 linguistic versions of the Ramayana are a prime example of this.

Referring to the three-language formula proposed by the Kothari Commission (1968), he said that the study of the mother tongue, the link language, and other Indian languages strengthens national unity. He said that democracy in practice is possible only through democracy in language, and that only through language can the concept of Incredible India be realized.

Presiding over the program, Professor Satyakam, Vice Chancellor of the Open University, said that every Hindi speaker should learn at least one South Indian language. To make Hindi accessible to the masses, respect for its sister languages and a willingness to learn them must be cultivated. He added that language is not just a government concern, but also a public concern. Preservation and promotion of language is possible only through public participation.

Public Relations Officer Dr. Prabhat Chandra Mishra stated that at the beginning of the program, Nodal Officer Professor Sanjay Singh verbally welcomed the guests and introduced the topic. Dr. Sunil Kumar conducted the program, and Professor Anandanand Tripathi expressed his gratitude to all the guests and participants. University faculty, officers, employees, researchers, and a large number of students were present on the occasion.

ESIC launches centralized online pat allowing patients to directly prov

SANYAM BHARAT

The Employees' State Insurance Corporation (ESIC) has launched a centralized online patient feedback system to improve the quality of healthcare services and ensure patient-centric healthcare at its hospitals and dispensaries across the country. Through this new system, insured persons and other beneficiaries will now be able to directly communicate their experiences, complaints, and suggestions regarding healthcare services to ESIC.

According to ESIC, this digital platform has been specifically developed to obtain patient feedback on key service parameters such as cleanliness, medical staff behavior, and availability of essential medicines. Beneficiaries will be able to submit their feedback through various digital channels, including SMS links, QR codes, and a web portal.

Under the new system, beneficiaries will receive a feedback link via SMS after receiving services at a hospital or dispensary. Patients can also share their feedback by scanning a QR code displayed on multilingual posters displayed on hospital

कर्मचारी राज्य
Employees' State In... ation

premises and in outpatient departments. The facility to submit feedback is also available through the official

त्रिभाषा सूत्र राष्ट्रीय एकता का सशक्त माध्यमः प्रो योगेन्द्र

- भाषाओं के संरक्षण में जनभागीदारी आवश्यकः प्रो सत्यकाम

पायनियर संवाददाता। प्रयागराज

केंद्र सरकार के बारह साल बेमिसाल कार्यक्रमों के अंतर्गत उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय में आयोजित व्याख्यानमाला के छठे दिन शुक्रवार को भारत की बहुभाषिकता एवं त्रिभाषा सूत्र विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, प्रयागराज के निदेशक प्रो योगेन्द्र प्रताप सिंह ने भारत की भाषाई विविधता की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परंपरा पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा

कि भाषा किसी व्यक्ति की नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक चेतना की अभिव्यक्ति है। भाषा संवाद का माध्यम होने के साथ साथ सभ्यता, संस्कृति और सामाजिक स्मृतियों की संवाहक भी है। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप भारतीय भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु भारतीय भाषा समिति का गठन किया गया है। विश्व में लगभग 6800 से 7000 भाषाएँ बोली जाती हैं और भाषा का निर्माण समाज द्वारा होता है। प्रो सिंह ने कहा कि भारत की बहुभाषिक परम्परा उसकी सांस्कृतिक अखण्डता का प्रतीक है। प्राचीन काल में चारधाम यात्राएँ भाषाई संवाद और सांस्कृतिक एकात्मता का माध्यम थीं। भाषाओं के बीच संवाद उन्हें लोकतांत्रिक बनाता है। रामायण के लगभग 250 भाषायी स्वरूप इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

उन्होंने कोठारी आयोग 1968 द्वारा प्रतिपादित त्रिभाषा सूत्र का उल्लेख करते हुए कहा कि मातृभाषा, संपर्क भाषा तथा अन्य भारतीय भाषा का अध्ययन राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करता है। उन्होंने कहा कि व्यवहार में लोकतांत्रिकता, भाषा में लोकतांत्रिकता के माध्यम से ही संभव है तथा भाषा के माध्यम से ही अतुल्य भारत की अवधारणा साकार हो सकती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो सत्यकाम ने कहा कि प्रत्येक हिंदी भाषी को कम से कम एक दक्षिण भारतीय भाषा अवश्य सीखनी चाहिए।

6:19 AM | 2.5KB/s

20 जून तिजारत ईपेप...

बाद नई आवासीय कॉलोनी बसाने जा रहा है। प्रयागराज विकास प्राधिकरण एयरपोर्ट थाना क्षेत्र में 100 एकड़ में एयरोसिटी का शीघ्र निर्माण करने जा रहा है जिसके लिए एक्वीजिशन का भी कार्य शुरू कर दिया जाएगा। पीडीए के उपाध्यक्ष ऋषिराज ने बताया कि एयरोसिटी में मध्यम आय वर्ग के लोगों के लिए जल्द ही प्लाट की

धनराशि र
जबकि 5
विकास प्र
जाएगा। पी

भारत की बहुभाषिक परम्परा सांस्कृतिक अखण्डता का प्रतीक : प्रो योगेन्द्र

तिजारत संवाददाता

प्रयागराज। केंद्र सरकार के 12 साल बेमिसाल कार्यक्रमों के अंतर्गत उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज में आयोजित व्याख्यानमाला के छठे दिन शुक्रवार को भारत की बहुभाषिकता एवं त्रिभाषा सूत्र विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान के निदेशक प्रोफ़ेसर योगेन्द्र प्रताप सिंह ने भारत की भाषाई विविधता की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परंपरा पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भाषा किसी व्यक्ति की नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक चेतना की अभिव्यक्ति है। भाषा संवाद का माध्यम होने के साथ-साथ सभ्यता, संस्कृति और सामाजिक स्मृतियों की संवाहक भी है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप भारतीय भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु भारतीय भाषा समिति का गठन किया गया है। विश्व में लगभग 6800 से 7000 भाषाएँ बोली जाती हैं और भाषा का निर्माण समाज द्वारा होता है। प्रोफ़ेसर सिंह ने कहा कि भारत की बहुभाषिक परम्परा उसकी सांस्कृतिक अखण्डता का प्रतीक है। प्राचीन काल में चारधाम यात्राएँ भाषाई संवाद और सांस्कृतिक एकात्मता का माध्यम थीं। भाषाओं के बीच संवाद उन्हें लोकतांत्रिक बनाता है। रामायण के लगभग 250 भाषायी स्वरूप इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं। उन्होंने कोठारी आयोग (1968) द्वारा प्रतिपादित त्रिभाषा सूत्र का उल्लेख करते हुए कहा कि मातृभाषा, संपर्क भाषा तथा अन्य भारतीय भाषा का अध्ययन राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करता है। उन्होंने कहा कि व्यवहार में लोकतांत्रिकता, भाषा में लोकतांत्रिकता के माध्यम से ही संभव है तथा भाषा के माध्यम से ही अतुल्य भारत की अवधारणा साकार हो सकती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफ़ेसर सत्यकाम ने कहा कि प्रत्येक हिंदीभाषी को कम से कम एक दक्षिण भारतीय भाषा अवश्य सीखनी चाहिए।

योग

❐ ची
कंट्रोल
दिवस
किया
❐ नि
स्वास्
उपयो

प्रयागर
जीवन के
कचेहरी
आयोजित
नागरिक
संबोधित
कंट्रोलर
श्री मिश्रा
व्यायाम
जून, 12

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
तिजारत

मीडिया मंच से गिनाई 12 वर्षों की वि

▶▶ काशी समेत पूरे देश में विकास की नई तस्वीर

त्रिभाषा सूत्र राष्ट्रीय एकता का सशक्त माध्यम - प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह

भाषाओं के संरक्षण में जनभागीदारी जरूरी - प्रो. सत्यकाम

इंडिया सावधान न्यूज
प्रयागराज ब्यूरो
(कौशलेंद्र मिश्र)

केंद्र सरकार के 12 साल बेमिसाल कार्यक्रमों के अंतर्गत उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज में आयोजित व्याख्यानमाला के छठे दिन शुक्रवार को भारत की बहुभाषिकता एवं त्रिभाषा सूत्र विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, प्रयागराज के निदेशक प्रोफेसर योगेन्द्र प्रताप सिंह ने भारत की भाषाई विविधता की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परंपरा पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भाषा किसी व्यक्ति की नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक चेतना की अभिव्यक्ति है। भाषा संवाद का माध्यम होने के

साथ-साथ सभ्यता, संस्कृति और सामाजिक स्मृतियों की संवाहक भी है। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप भारतीय भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु भारतीय भाषा समिति का गठन किया गया है। विश्व में लगभग 6,800 से 7,000 भाषाएँ बोली जाती हैं और भाषा का निर्माण समाज द्वारा होता है। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि भारत की बहुभाषिक परम्परा उसकी सांस्कृतिक अखण्डता का प्रतीक है। प्राचीन काल में चारधाम यात्राएँ भाषाई संवाद और सांस्कृतिक एकात्मता का माध्यम थीं। भाषाओं के बीच संवाद उन्हें लोकतांत्रिक बनाता है। रामायण के लगभग 250 भाषायी स्वरूप इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सत्यकाम ने कहा कि प्रत्येक हिंदीभाषी को कम से कम एक दक्षिण भारतीय भाषा अवश्य सीखनी चाहिए। हिंदी को जन-जन तक पहुँचाने के लिए उसकी भगिनी भाषाओं के प्रति सम्मान तथा उन्हें सीखने की प्रवृत्ति विकसित करनी होगी। उन्होंने कहा कि भाषा केवल सरकार का नहीं, अपितु आमजन का विषय है। भाषा का संरक्षण और संवर्धन जनभागीदारी से ही संभव है।

जनसंपर्क अधिकारी डॉ प्रभात चन्द्र मिश्र ने बताया कि कार्यक्रम के प्रारंभ में नोडल अधिकारी प्रोफेसर संजय सिंह ने अतिथियों का वाचिक स्वागत एवं विषय प्रवर्तन किया। संचालन डॉ. सुनील कुमार ने किया। प्रोफेसर आनंदानंद त्रिपाठी ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षकगण, अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।

मंत्र भारत

प्रयागराज - शनिवार, 20 जू

त्रिभाषा सूत्र राष्ट्रीय एकता का सशक्त माध्यम : प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह

भाषाओं के संरक्षण में जनभागीदारी आवश्यक : प्रोफेसर सत्यकाम

मंत्र भारत संवाददाता

प्रयागराज। केंद्र सरकार के 12 साल बेमिसाल कार्यक्रमों के अंतर्गत उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज में आयोजित व्याख्यानमाला के छठे दिन शुक्रवार को भारत की बहुभाषिकता एवं त्रिभाषा सूत्र विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, प्रयागराज के निदेशक प्रोफेसर योगेन्द्र प्रताप सिंह ने भारत की भाषाई विविधता की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परंपरा पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भाषा किसी व्यक्ति की नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक चेतना की अभिव्यक्ति है। भाषा संवाद का माध्यम होने के साथ-साथ सभ्यता, संस्कृति और सामाजिक स्मृतियों की संवाहक भी है। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप भारतीय भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु भारतीय भाषा समिति का गठन किया गया है। विश्व में लगभग 6800 से 7000 भाषाएँ बोली जाती हैं और भाषा का निर्माण समाज द्वारा होता है। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि भारत की बहुभाषिक परम्परा उसकी सांस्कृतिक अखण्डता का प्रतीक है। प्राचीन काल में चारधाम यात्राएँ भाषाई संवाद और सांस्कृतिक एकात्मता का माध्यम थीं। भाषाओं के बीच संवाद उन्हें लोकतांत्रिक बनाता है। रामायण के लगभग 250 भाषायी स्वरूप इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

उन्होंने कोठारी आयोग (1968) द्वारा प्रतिपादित त्रिभाषा सूत्र का उल्लेख करते हुए कहा कि मातृभाषा, संपर्क भाषा तथा अन्य भारतीय भाषा का अध्ययन राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करता है। उन्होंने कहा कि व्यवहार में लोकतांत्रिकता, भाषा में लोकतांत्रिकता के माध्यम से ही संभव है तथा भाषा के माध्यम से ही अतुल्य भारत की अवधारणा साकार हो सकती है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सत्यकाम ने कहा कि प्रत्येक हिंदीभाषी को कम से कम एक दक्षिण भारतीय भाषा अवश्य सीखनी चाहिए। हिंदी को जन-जन तक पहुँचाने के लिए उसकी भगिनी भाषाओं के प्रति सम्मान तथा उन्हें सीखने की प्रवृत्ति विकसित करनी होगी। उन्होंने कहा कि भाषा केवल सरकार का नहीं, अपितु आमजन का विषय है। भाषा का संरक्षण और संवर्धन जनभागीदारी से ही संभव है।

जनसंपर्क अधिकारी डॉ प्रभात चन्द्र मिश्र ने बताया कि कार्यक्रम के प्रारंभ में नोडल अधिकारी प्रोफेसर संजय सिंह ने अतिथियों का वाचिक स्वागत एवं विषय प्रवर्तन किया। संचालन डॉ. सुनील कुमार ने तथा प्रोफेसर आनंदानंद त्रिपाठी ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षकगण, अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।